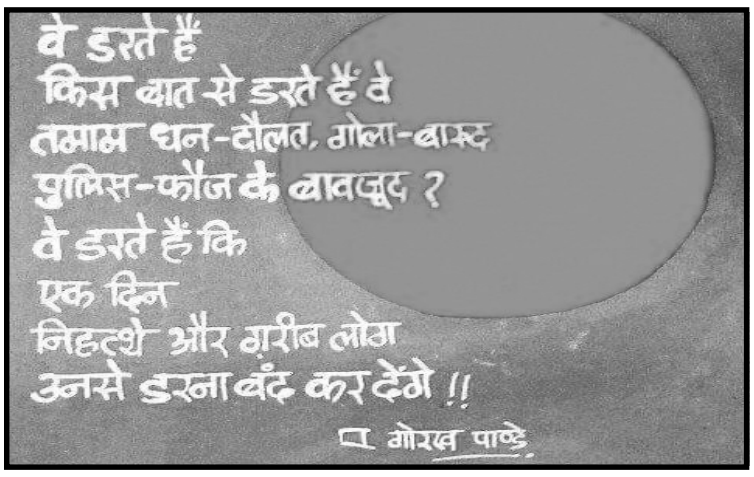

कविता

झूठ बोलने में नहीं आती ....

डॉ. रामवीर

झूठ बोलने में नहीं आती
जिन्हें तनिक भी लाज,
ऐसे नेताओं से पड़ा है
देश का पाला आज।

सच अपने पैरों चलता है
झूठ भरे परवाज़,
कुदरत ने सच और झूठ का
ऐसा रचा मिज़ाज।

दो घंटे से अधिक समय तक
जो संसद में बोला,
उसने मूल मुद्दे पे केवल
दो ही मिनट मुंह खोला।

बाकी सारे समय झूठ की
तलता रहा जलेबी,
जीवन भर यह ही तो करता
रहा पुराना ऐबी।

भारत की संस्कृति का यूं तो
करते रोज बखान,
लेकिन नहीं जानते उसकी
ये असली पहचान।

सत्येनोत्तम्भिता भूमि
यह है ऋग्वेद की वाणी,
संस्कृति के ठेकेदारों ने
क्यों यह बात न मानी।

कविता / शैलेंद्र श्रीवास्तव

ऐ विषधर इतना विष
कहाँ से पाया है जो मद मे चूर
बीन पर झूमते

कभी मुसलमानों, कभी दलितों,
कभी वामपंथियों को
फुफकारते रहते हो ।

और बलातकरियों को,
गंदी बात बोलने वाले सहचरों को,
कमल थमाते रहते हो

ऐ विषधर इतना तो बता दो
कहाँ छिपे रहे तुम सब
सत्तर साल तक ।

इतिहास के पन्नों से

कट्टर मुस्लिम/ सय्यद आबिद नक़वी

सच में मुस्लिम बेहद कट्टर होते हैं, दूसरे धर्म का आदर करना तो जानते ही नहीं, और अगर कहीं यह पॉवर में हों तो दूसरे धर्म वालों का जीना हराम कर देते हैं, आईए इसकी एक बानगी देखते हैं--

हज़रत अमीर खुसरो-- ने अपनी मशहूर रचना 'छाप तिलक सब छीनी रे' में कृष्ण जी के लिए लिखा--

ऐ री सखी मैं जो गई थी पनिया भरन को,
छीन झपट मोरी मटकी पटकी मोसे नैना मिलाईके।

सैयद इब्राहीम रसखान-- रसखान के जन्म स्थान के बारे में कुछ पक्का नहीं मालूम लेकिन एक मान्यता के अनुसार रसखान मेरे ग्रह नगर अमरोहा में पैदा हुए, कृष्ण के बड़े भक्त थे हिंदू मान्यताओं के अनुसार स्वयं कृष्ण जी ने उन्हें साक्षात दर्शन दिए, उनकी रचना की एक बानगी--

सेस, गनेस, महेस, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरंतर गावें,
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुभेद बतावें,
नारद से सुक ब्यास रहें पचि हारे तऊ पुनि पार न पावें,
ताहि अहीर की छोहरियां छछिया भर छाछ पे नाच नचावें

अब्दुर्रहीम खानख़ाना रहीमदास-- सम्राट अकबर के मौसेरे भाई और तुलसीदास के घनिष्ट मित्र रहीम दास ने वैसे तो कई अलग अलग विषयों पर बहुत लिखा है लेकिन कृष्ण भक्ति में भी उनकी रचनाएं शानदार हैं--

ललित कलित माला का जवाहर जड़ा था,
चपल चखन वाला चांदनी में खड़ा था,
कटितर निच मेला पीत सेला नवेला,
अलिबिन अलबेला 'श्याम' मेरा अकेला।

आलम शेख़-- आलम शेख़ को बहुत से विद्वान रसखान के समकक्ष रखते हैं--

पालने खेलत नंद-ललन छलन बलि,

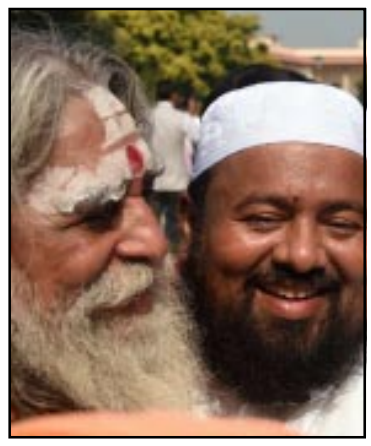

गोद लै लै ललना करति मोद गान है ।
'आलम' सुकवि पल पल मैया पावै सुख,
पोषति पीयूष सुकरत पय पान है ।
नंद सों कहति नंदरानी हो महर सुत,
चंद की सी कलनि बढ़तु मेरे जान है ।
आइ देखि आनंद सों प्यारे कान्हा आनन में,
आन दिन आन घरी आन छबि आन है।

उमर अली--यह बंगाल के प्राचीन श्रीकृष्ण भक्त कवियों में से एक हैं। इनकी रचनाओं में भगवान कृष्ण में समाए हुए राधाजी के प्रति प्रेम भाव को दर्शाया गया है। इन्होंने बंगाली में वैष्णव पदावली की रचना की है।

नशीर मामूद--यह भी बंगाल से ही आते हैं। इनका जो पद मिला है वह गौचारण लीला का वर्णन करता है। पद भाव रस से पूर्ण है। श्रीकृष्ण और बलराम मुरली बजाते हुए गायों के साथ खेल रहे हैं। सुदामा आदि सखागण उनके साथ हैं। इनकी रचना इस प्रकार है--

धेनु संग गांठ रंगे, खेलत राम सुंदर श्याम।

ताज मुगलानी-- औरंगज़ेब की चचेरी बहन थीं उनकी एक रचना देखिए--

छैल जो छबीला, सब रंग में रंगीला
बड़ा चित्त का अड़ीला, कहूं देवतों से न्यारा है।।
माल गले सोहै, नाक-मोती सेत जो है कान,
कुण्डल मन मोहै, लाल मुकुट सिर धारा है।।

नज़ीर अकबराबादी-- नज़ीर लिखते हैं-

तू सबका खुदा, सब तुझ पे फ़िदा, अल्लाहो ग़नी अल्लाहो ग़नी
हे कृष्ण कन्हैया, नंद लला, अल्लाहो ग़नी, अल्लाहो ग़नी।

नवाब वाजिद अली शाह--1843 में वाजिद अली शाह ने राधा-कृष्ण पर एक नाटक करवाया था, लखनऊ के इतिहास की जानकार रोज़ी लेवेलिन जोंस 'द लास्ट किंग ऑफ़ इंडिया' में लिखती हैं कि ये पहले मुसलमान राजा (नवाब) हुए जिन्होंने राधा-कृष्ण के नाटक का निर्देशन किया था, लेवेलिन बताती हैं कि वाजिद अली शाह कृष्ण के जीवन से बेहद प्रभावित थे, वाजिद के कई नामों में से एक 'कन्हैया' भी था।

स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और उड़ीसा के गवर्नर रहे बिशंभर नाथ पांडे ने वेदांत और सूफ़ीवाद की तुलना करते हुए एक लेख में कुछ मुसलमान कृष्ण भक्तों का ज़िक्र किया है. इनमें सबसे पहले थे सैयद सुल्तान जिन्होंने अपनी क़िताब 'नबी बंगश' में कृष्ण को नबी का दर्ज़ा दिया.

दूसरे, अली रज़ा इन्होंने कृष्ण और राधा के प्रेम को विस्तार से लिखा.

तीसरे, सूफ़ी कवि अकबर शाह जिन्होंने कृष्ण की तारीफ़ में काफी लिखा.

बिशंभर नाथ पांडे बताते हैं कि बंगाल के पठान शासक सुल्तान नाज़िर शाह और सुल्तान हुसैन शाह ने महाभारत और भागवत पुराण का बांग्ला में अनुवाद करवाया. ये उस दौर के सबसे पहले अनुवाद का दर्ज़ा रखते हैं.

बात बहुत लंबी न हो इसलिए बहुत कुछ छोड़ दे रहा हूँ.

यह सब मुस्लिम हुकूमत के दौर के लोग हैं, आज के दौर के लोगों का मैंने कोई ज़िक्र नहीं किया है, मुझे नहीं मालूम इनमें कितनों को मुस्लिम बादशाहों ने सूली पर चढ़वाया, फाँसी दी, कोल्हू में पिरवाया या हाथी से कुचलवाया!

मां के दूध का व्यवसाय

खबर है कि बड़े शहरों में दूध बैंकों की स्थापना की गयी है, जहां झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाली ग़रीबों की आबादी सबसे अधिक है। जिस तरह बल्ड बैंक के लिए ग़रीब लोग अपना खून बेचते हैं उसी तरह ग़रीब महिलाएं अपने दुधमुंहें बच्चों के मुंह से दूध छीनकर इन दूध बैंकों में बेचती हैं। अमीरों के बच्चों को पिलाने के साथ-साथ इस दूध से आईसक्रीम बनाकर अकूत मुनाफ़ा कमाया जा रहा है। भारत सरकार और यूनिसेफ मिलकर अगस्त के पहले सप्ताह को स्तनपान सप्ताह के रूप में मनाते हैं। वे बताते हैं कि जन्म के पहले घंटे बाद ही शिशु को मां का गाढ़ा-पीला दूध अवश्य पिलाना चाहिए। क्योंकि यही दूध प्रतिरोध क्षमता बढाकर बच्चों को भविष्य में होनेवाली अनेक बीमारियों से बचाता है।

इसके साथ ही मां के दूध का भावानात्मक और सामाजिक पहलू भी बेहद सशक्त रहा है। कहानियों में कितने ही अवसरों पर अत्याचारी के विनाश के लिये मां अपने बेटों को दूध की सौगंध दिलाती है। इतिहास में राजाओं के घर धाय रखने की परम्परा के प्रमाण मिलते हैं। धाय उनके बच्चों को अपनी छाती से लगाकर दूध पिलाती थी। इस मामले में पन्ना धाय की कहानी बहुत प्रसिद्ध है।

लेकिन आज पूंजीवादी मुनाफ़ाखोर समाज ने मां के दूध को खरीदने-बेंचने की वस्तु में बदल दिया है। इसलिए मां के दूध के बजाय इसे स्त्री का दूध बताया जा रहा है।

आधुनिक तकनीकों के चलते ब्लड बैंकों की तरह दूध बैंक बनाये जा रहे हैं। लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू यह है कि हमारे देश में एक हज़ार में छियालीस नवजात शिशु मां का दूध न मिलने के कारण मर जाते हैं। ये दूध बैंक भी ग़रीबों को दूध नहीं देते।

आम घरों में महिलाएं बच्चों को अपना दूध पिलाती हैं। परन्तु उच्च वर्ग की महिलाएं अपने शारीरिक सौन्दर्य को बरकरार रखने के लिए दूध नहीं पिलाती। वे मानती है कि बच्चों को दुध पिलाने से उनके शरीर और चेहरे की आभा फीकी पड़ जायेगी। उनके पति भी ऐसा मानते हैं। इन्हीं के लिए मां के दूध का व्यवसाय शुरू हुआ।

सबसे पहले 1889 में स्वीडेन और डेनमार्क में दूध रसोई के नाम से इस काम की शुरूआत की गयी। यहां पहले तीन महीने का दूध मां से इक्कीस डॉलर प्रति लीटर की दर से खरीदा जाता था। अमरीका में ऐसे आज ऐसे आठ दूध बैंक संचालित हैं। इसी तर्ज पर भारत के कोलकाता, मुंबई, पुणे और सूरत में दूध बैंक बनाये गये और अभी-अभी उदयपुर में एक बैंक शुरू किया गया है। अजीब बात है कि विकास की सभी योजनाओं को गरीबों की कीमत पर ही अमली जामा पहनाया जाता है।

इस तरह हमें दूध बैंक की योजना के मानवीय पहलूओं पर भी गौर करनी चाहिए। क्या किसी लावारिस बच्चे या जिस मां के स्तनों में दूध नहीं आता उन्हें कभी इन बैंकों से दूध मिल पाता है? मां जब बच्चे को छाती से चिपकाकर दूध पिलाती है, वह सिर्फ उसकी भूख ही नहीं मिटाती बल्कि संवेदनात्मक अनुभुतिओं का अहसास और आदन-प्रदान करती है। यही ममता का सुख है। यह अहसास मरते दम तक बना रहता है और हमें प्रेरणा देता है। बैंक के दूध को बोतल या चम्मच से पिलाकर कभी भी यह अहसास पैदा किया जा सकता?

विचारणीय प्रश्न है क्या इन दूध बैंकों में अमीर घरानों की मांओं का दूध है? नहीं, बल्कि उन करोड़ों ग़रीब मांओं का जिनके अंदर इतना दूध ही नहीं बनता जिसे वे बेच सकें लेकिन बेबस मांएं पैसे के लिए अपने बच्चों को भूखा रखकर दूध बैंक को अपना दूध बेचती है। कुपोषण के चलते ऐसे बच्चे असमय ही काल के गाल में समा जाते हैं या अपंग हो जाते हैं। पूंजीवादी विकास की इन योजनाओं के अंदर अमानवीय मुनाफ़े की घृणित नीतियां छिपी हुई हैं। इसलिए दूध बैंकों के पैरोकार ग़रीबों के बच्चों की कीमत पर अमीरों के बच्चों को मां का दूध पिलाने का षड़यंत्र रच रहे हैं। देश की सम्पदा लूटने के बाद भी इन मुनाफ़ाखोरों की हवस शांत नहीं हुई। अब मांओं का दूध लूटकर अपने हित में मुनाफ़े के लिए उसका इस्तेमाल कर रहे हैं। जिस तरह समुद्र मंथन के समय देवताओं ने छल-प्रपंच से अमृत छक लिया और बाकी को इससे वंचित कर दिया। आज उससे भी भयावह जाल में फंसकर कथित सभ्य समाज के अमीरों ने गरीबों से मां का दूध भी छीनने की योजना बना ली है।

इस अमानवीय, घृणित, और निंदनीय व्यवसाय पर यदि शीघ्र रोक न लगाई गयी तो आने वाले भविष्य में मां की ममता और गरिमा नष्ट हो जायेगी। **-देश विदेश**